किसान

सिन्धु तट पर, युद्धस्थल में,
वांछित गति का पाकर,
अन्तिम वाणी से पल पल में
निज शोणित से लिखवाकर,
हे आगत ! मरने के पहले,
वह निशान मलिन
छोड़े जाना है, वह
आत्म-चरित हो चिर मलिन !